भीगी पलकें

(लघुकथा-संग्रह)

दिलीप भाटिया

बोधि प्रकाशन
एफ-77, सेक्टर 9, रोड नं. 11,
करतारपुरा इंडस्ट्रियल एरिया, बाईस गोदाम, जयपुर-302006
दूरभाष : 0141-2503989, 98290-18087
ई-मेल : bodhiprakashan@gmail.com

कॉपीराइट © दिलीप भाटिया

प्रथम संस्करण : नवम्बर, 2014
ISBN :
कम्प्यूटर ग्राफिक्स :
मुद्रक : तरु ऑफसेट, जयपुर # 09829018087
मूल्य : ₹ 50/-

BHEEGI PALKEN (SHORT STORIES) by Dileep Bhatia

डॉ. मिली

को सस्नेह समर्पित

आभार

श्री मायामृग एवं उनकी टीम का

अनुक्रम

केरियर	9	अखंड रामायण	२२
शगुन	10	भोज	23
डूबता सूरज	11	बेवकूफ24	
मकान	12	नेट	25
फेसबुक	13	भीगी पलकें	26
आधा टिकिट	14	कोचिंग	27
निर्णय	15	नियमावली	28
दूसरी पोती	16	रजिस्टर	29
पेंशन : एक	17	पोषाहार	30
पेंशन : दो	18	जन्मदिन	31
पोस्टकार्ड	१९	उधार	32
मनी ऑर्डर	२०	पुस्तक	33
मोतियाबिन्द	२१	दीपक	34
फोटो	35	धर्म	51
रिश्ते	36	लिफाफे	52
लक्ष्मी	37	सदस्य	53
निरीक्षण	38	मोबाइल	54
बेटी	39	नियम	55
दहेज	40	दान	56
बेस्ट फ्रेंड	41	अनुभव	57
ट्यूशन	42	किताब	58
तुलसी	43	ऑटोग्राफ	59
खीर	44	पुस्तक मित्र	60
लड्डू	45	इंसान	61
अगरबत्ती	46	गुटखा	62
मंत्र	47	कर्म	63
एकादशी	48	समझदारी	64
मित्र	49	मन	65
प्रकृति	50	सम्मान	66

कलाई	67	समय	83
बहन	68	प्रार्थना	84
गलती	69	यज्ञ	85
आहुति	70	प्रोजेक्ट	86
सोना	71	फोटो	87
दूध	72	नि:शुल्क	88
प्रमोशन	73	सिस्टर	89
शादी	74	बिस्कुट	90
फीस	75	पानी	91
कागज	76	रोशनी	92
पुल	77	पुस्तकालय	93
कविता	78	ऑपरेशन	94
गुल्लक	79	छाया	95
तर्पण	80	छुट्टी	96
सूचना	81	चरित्र	97
प्रॉपर्टी	82	विधवा	98
स्नेह	99	विदाई	104
राखी	100	तिलक	105
घर	101	भामाशाह	106
बाई	102	जीवन	107
शर्ट	103	शोध	108

केरियर

मनीषा केरियर हेतु नौकरी करना चाह रही थी। कमल भी सहमत था। कमल की इच्छा थी कि बच्चों को दादाजी सम्भाल लेंगे, किन्तु मनीषा का दो टूक आदेश था, ''तुम्हारे पूज्य पिताश्री लाड में बच्चों को बिगाड़ देंगे, बच्चों को होस्टल में डालने से जिम्मेदारी से मुक्ति मिलेगी। तुम्हारे पिताश्री ओल्ड एज़ होम में भजन पूजन में समय का सदुपयोग कर सकेंगे।'' कमल क्या कहता?

शगुन

त्यौहार पर रंग बिरंगी लाइट सीरीज से सजावट कर शानदार पार्टी चल रही थी, पर अचानक पावर कट से घर में अंधेरा हो गया। रंग में भंग से सब दुखी थे, बालकनी के कोने में चारपाई पर पड़ी अम्मा बुदबुदाई, ''मैंने पहले ही कहा था, शगुन के पांच दीपक के लिए, पर मुझ बूढ़ी की कौन सुनता है, मोमबत्ती तक तो हैं नहीं घर में, आधुनिक हैं सब।''

डूबता सूरज

शालिनी बेटी की शादी के निमंत्रणों की सूची निर्मल, अरूणा फाइनल कर रहे थे, सूची देखकर अरूणा बोली, ''तुमने जीवन अंकल का नाम क्यों काट दिया? उनसे तो हमारे घनिष्ठ संबंध थे।'' निर्मल का फैसला था, ''अब वे रिटायर हो गए हैं, उनके हाथ में न मेरा प्रमोशन है, न ही गोपनीय रिपोर्ट की ग्रेडिंग, डूबते सूरज को कौन अर्घ्य देता है? बूढ़ा लिफाफे में 100 का नोट लेकर आ जाएगा।''

मकान

सेवानिवृत्ति के पश्चात् बाबूजी ने पैतृक गांव में मकान बनवाया, इसी बहाने बेटे बहू रिश्तेदारों से जुड़े रहेंगे, पर बहूरानी तो प्रतीक्षा कर रही थी कि बाबूजी की मुक्ति हो, तो गांव का मकान बेचकर शहर में फ्लेट बुक करवा लेंगे, गांव में घुटन में कौन रहेगा, न इन्टरनेट है, सिर ढ़क कर बुढ़ियाओं के पैर कौन छुएगा, शहर में फ्लेट में हर हफ्ते किटी पार्टी तो कर सकूंगी।

फेसबुक

विनीता शिकायत कर रही थी, ''अंकल, मैंने फेसबुक पर आप को इनवाइट किया था, पर आप मेरी शादी में फिर भी नहीं आए, क्यों?'' अंकल बोले, ''बेटी विनीता, फेसबुक पर मैंने लाइक तो कर ही दिया था, स्वयं घर आकर फेस टू फेस निमंत्रण देने आती, तो अवश्य ही तुम्हें आशीर्वाद देने आता, जीवन मात्र फेसबुक तक ही सीमित नहीं है।''

आधा टिकिट

टिकिट कलक्टर रोहित आधा टिकिट देखकर बोला, ''पूरा टिकिट लगेगा, 450 रुपये पेनल्टी निकालिए।'' समीर बोला, ''सर आठ वर्ष का है'' टिकिट कलक्टर बोले, ''लेपटॉप पर फेसबुक पर चेटिंग कर रहा है, 13 वर्ष से कम का बच्चा फेसबुक पर एकाउंट खोल ही नहीं सकता, अभी से बच्चे को झूठ बोलना क्यों सिखा रहे हैं? निकालिए, पेनल्टी, रसीद काट दी है मैंने।''

निर्णय

रोहित बॉस के बेटे के जन्मदिन पर उपहार देने हेतु कोई महंगी गिफ्ट खरीदने जा रहा था, अचानक घर में काम करने वाली बाई कमला का फोन मोबाइल पर आया, ''सर, मेरे बच्चे का एक्सीडेंट हो गया है, ऑपरेशन तुरन्त होगा, 5000 रुपये जमा करने होंगे, मेरे बच्चे का जीवन बचा लीजिए, सर।'' कमला फूट-फूट कर रो रही थी, रोहित ने निर्णय बदल दिया, कार हास्पिटल की और मोड़ दी कमला की सहायता के लिए।

दूसरी पोती

राम प्रसाद उदास थे, दूसरी बार भी लड़की ही हो गई बहूरानी को। पर बहूरानी तो फिर भी पार्टी दे रही हैं, कल रात को फोन भी किया था, ''बाबूजी, आना ही होगा आपको, मैं क्षमा चाहती हूँ कि मैंने आपका कहना नहीं माना, सोनोग्राफी का गलत काम नहीं किया। आने वाली मासूम की हत्या जन्म से पहले ही करवाने की मेरी हिम्मत नहीं थी। सॉरी, बाबूजी आऐंगे ना पोती को आशीर्वाद देने?''

पेंशन : एक

कमल किशोर जी आश्चर्य चकित थे, सूखी ब्रेड के स्थान पर आज नाश्ते में हलवा पकौड़ी क्यों, अचानक, केलेंडर पर निगाह पड़ी, तो समझ में आ गया कि आज पहली तारीख है, पेंशन मिलने का दिन है। हर महीने एक तारीख को बैंक जाने से पहले उनकी अच्छी खातिरदारी होती है, फिर पूरे महीने वही सूखी ब्रेड या दो बिस्कुट। अर्थपूर्ण रिश्ते हैं इस कलियुग में।

पेंशन : दो

विवेक पोस्टमास्टर से प्रार्थना कर रहा था, ''सर, मेरी मां अशक्त हैं, उनकी फेमिली पेंशन मुझे दे सकते हैं क्या? मैं फार्म पर उनके हस्ताक्षर करवाकर घर से ले आया करूंगा, एक विधवा वृद्धा के आशीष मिलेंगे आप को।'' पोस्टमास्टर बोले, ''आशीष से मुझे क्या मिलेगा? पेंशन मैं आपको दे दूंगा, बस 500 रुपये अपना कमीशन काट लिया करूंगा, आप को भी फायदा, मुझे भी।''

पोस्टकार्ड

श्रेष्ठ बोला, ''क्या पापा, एस .एम .एस . करना सीख लो ना, अब कौन आपके पोस्टकार्ड पढ़ता होगा? जमाने के साथ चलना सीखों, पोस्टकार्ड का फैशन नहीं रहा, अब पापा बोले, ''श्रेष्ठ, चुप रहो मुझे भी अपनी इच्छानुसार जीवन जीने का हक है, तुम्हारे भरोसे नहीं हूँ मैं, तुम कष्ट मत करना, मैं सुबह ही स्वयं जाकर पोस्ट ऑफिस से पोस्टकार्ड खरीद लाऊंगा।''

मनी ऑर्डर

बूढ़ी अम्मा प्रतिदिन पोस्टमेन से पूछती थीं, ''भैया, मेरे बेटे का मनी ऑर्डर आया क्या?'' ''नहीं, अम्मा, सुनकर निराशा हो जाती, पोस्टमेन भी इंसान था, एक दिन आकर बोला, ''लो, अम्मा 500 रुपये तुम्हारे बेटे का मनी ऑर्डर आ गया है।'' अपने पास से ही उसने झूठ बोलकर रुपये दे दिये थे, सोचा जैसे मेरी मां, वैसी यह अम्मा, ''बेटा, साइन तो कर दूं।'' पर पोस्टमेन तो साइकिल तेज चलाते हुए चला गया था।

मोतियाबिन्द

शहर से सुनील गांव आया था, मां को पत्नी की डिलीवरी के लिए सहायता हेतु पर मां दो टूक सुनाने लगी, ''सुनील बेटे, मेरे मोतियाबिन्द के ऑपरेशन के लिए तुम्हारे पास छुट्टी नहीं थी। पड़ोस का रामधन मेरे साथ शहर जाकर ऑपरेशन करवा कर लाया। उसकी बहू के भी बाल बच्चा होने वाला है, जिसने मेरे लिए किया है, मैं भी उसके लिए करूंगी, तुम तो पैसे वाले हो, कोई बाई रख लेना।'' सुनील निरूत्तर था।

अखंड रामायण

सुमति पड़ौस के अंकल से बाली, ''अंकल, कल मेरी परीक्षा है अखंड रामायण का माइक बन्द कर दें, प्लीज, मैं पढ़ नहीं पा रही हूं। पूरा साल बर्बाद हो जाएगा, पेपर ठीक नहीं हुआ तो।'' अंकल बोले, ''मैं भी प्रमोशन के लिए भगवान का पाठ करवा रहा हूँ, मुझे तुम्हारी परीक्षा से क्या लेना-देना, मेरे भी प्रमोशन का सवाल है, तुम हमारे घर के प्रोग्राम में सलाह मत दो।''

भोज

नितिन के पापा की मृत्यु के पश्चात् तेरहवीं पर कॉलोनी के अनेकों परिचितों के लिए भोज का इंतजाम था, उसके पापा के घनिष्ठतम मित्र सूरजमल जी नहीं आए, उसने फोन किया, ''अंकल, आप की प्रतीक्षा है।'' सूरजमल जी ने कहा, ''सॉरी बेटा, जीते जी तो वे ढंग के खाने एवं समय पर दवाई के लिए तरसते रहे, अब पकवान खिलाने से क्या लाभ? मेरी प्रतीक्षा मत करना, मैं नहीं खा पाऊंगा, तुम्हारा भोज।''

बेवकूफ

महेश के मित्रगण ताने कस रहे थे, ''मोहन, बेवकूफहो, रात की पार्टी में शराब ड्रिंक्स छोड़कर भी तुम फ्रूट जूस पी रहे थे।'' मोहन बोला, ''दोस्तो, मैं अपने उसूलों से समझौता नहीं कर सकता। मुझे अपनी बेवकूफी पर गर्व है, घर जाकर मां पत्नी के समक्ष मैं झूठ नहीं बोल सकता, मैं शराब पी भी लूं, तो मेरी बेटी को किस मुंह से अच्छी आदतों के बारे में शिक्षा दूंगा?''

नेट

मनीष पत्नी सुधा को समझा रहा था, ''मम्मीजी से प्रार्थना करो कि कुछ दिन और रुक जायें, गुड़िया अभी बहुत छोटी है, तुम्हें कुछ अनुभव भी नहीं, कैसे अकेले इसे पालेंगे हम?'' सुधा व्यंग्य से बाली, ''तुम्हारी माताश्री के सामने मैं नहीं झुकने वाली, नेट पर गूगल सर्च में सब जानकारी मिल जाती है, पूरी वीडियो रील आ जाती है, कैसे बच्चे को नहलायें, कहां तेल लगायें, पुराने जमाने के अनुभव मेरे किस काम के?''

भीगी पलकें

कैलाश ने समीप के गांव तमलाव के सरकारी स्कूल में मां की स्मृति में चार पंखे भेंट किए, तो समारोह को सम्बोधित करते हुए नाज़िमा मैडम ने भरे गले व भीगी पलकों से कहा, ''स्कूल परिवार कैलाश सर का कृतज्ञ है, कापी पेंसिल तो सब बांट जाते हैं, पंखे कौन देता है? कई सालों तक बच्चे व हम गर्मी में ठंडी हवा खाकर सर को दुआऐं देते रहेंगे।'' कई बच्चे अपनी आंखें पोंछ रहे थे।

कोचिंग

दक्ष ने कहा, ''मम्मी, मैं कल से ट्यूशन नहीं जाऊंगा, सर कुछ पढ़ाते तो हैं नहीं, समय खराब होता है।'' मम्मी बोली, ''पर बेटे, पूरे साल भर की फीस हम भर चुके हैं, फीस वापिस भी नहीं मिलेगी, बीच सेशन में दूसरी जगह फिर पूरे साल की फीस भरनी होगी, कहां से लाऐंगे इतने रुपये?'' दक्ष बोला ''मम्मी, इसमें मेरा क्या कसूर है, वैसे मुझे ट्यूशन की आवश्यकता भी क्या थी? आप भी तो पोस्ट ग्रेजुएट हैं ना।''

नियमावली

नवोदित लेखक सुरेश ने पत्रिका के संपादक को पत्र लिखकर रचनाएं प्रकाशित करने के लिए नियमावली मंगवाई, एक सप्ताह पश्चात् नियमावली आ गई, ''आजीवन सदस्यता अनिवार्य, पारिश्रमिक नहीं दे पायेंगे, रचनाएं अप्रकाशित होनी चाहिए। डाक में खोने पर दूसरी प्रति नहीं भेजी जाएगी, परिशिष्ट प्रकाशन हेतु अलग सहयोग राशि, सम्मान पत्र प्राप्त करने के लिए विशिष्ट शुल्क देना होगा ...।''

रजिस्टर

श्मशान मुक्तिधाम के गेट पर चौकीदार के पास रजिस्टर था, उसमें परिजनों को नाम, पते, मोबाइल नम्बर इत्यादि की एंट्री करनी अनिवार्य थी। रमेश ने जिज्ञासा वंश इस का कारण पूछा, चौकीदार बोला, ''सर, समाचार–पत्र वाले तीये की बैठक के विज्ञापन के लिए हमसे सूचना ले जाते हैं, हमें भी कमीशन मिल जाता है, हमारे लिए तो ऊपर की कमाई करने के लिए इस रजिस्टर का ही सहारा है।''

पोषाहार

मयंक ने नवरात्रि में गांव के सरकारी स्कूल में पोषाहार बनाने वाली दो बाईयों के लिए साड़ी भिजवाई, तो भाई दूज पर वे दोनों मयंक का घर पूछती तलाशती आई, ''सर, आपने हमें साड़ी देकर इतना मान दिया है, हम आज आप को भाई दूज का टीका करने आई हैं।'' भीगी पलकों से मयंक पोषाहार बनाने वाली बाईयों से शगुन का टीका करवा रहा था।

जन्मदिन

प्रियंक बोला, ''हरीश, कल मैं अपने बर्थडे पर पूरे दिन फेसबुक पर था, खूब सारे कार्ड व कमेंट आते रहे फ्रेन्ड्स के, मजा आ गया, पर कल तुम्हारा भी तो बर्थडे था, पर तुम्हारा फोन नो रिप्लाई हो रहा था, कहां थे तुम?'' हरीश बोला, ''हाँ, बिजी था, मन्दिर गया, गांव के स्कूल के बच्चों के लिए बिस्कुट लेकर गया, ब्लड बैंक में जाकर रक्तदान दिया, नर्सरी से एक पौधा लाया बालकनी में लगाने के लिए।''

उधार

मित्र पुत्र की समय पर सहायता करने के लिए नीरज ने दो लाख रुपये का चेक तुरन्त काट कर दे दिया था, बहुत समय प्रतीक्षा के पश्चात् उसने मित्र पुत्र को स्मरण करवाया, तो वह नाराज हो कर अपशब्दों पर उतर आया, एक हितैषी से उसने समाधान पूछा तो उत्तर मिला, ''भाई, उधार देकर भूल जाओ, वापिस मिल जाए तो तुम्हारा भाग्य, वरना तुम स्वयं उधार वापिस आने की अपेक्षा मत करो।''

पुस्तक

नेहा ने स्वयं ही अपने जन्मदिन पर अपने प्रिय अंकल राजेश को फोन किया, ''अंकल, प्लीज, मुझे पता है आप शाम को आयेंगे ही, मुझे आशीर्वाद देने पर, किताबें मत लाना, दीपावली की सफाई में मम्मी आपकी प्रेम से दी हुई पुस्तकों को फालतू समझ रद्दी में दे देती है, मुझे दुख होता है, पुस्तकों की हमारे घर में कोई कद्र नहीं है, प्लीज अंकल, आप पुस्तकें मत लाइए।''

दीपक

नीरजा ने पति से कहा, ''सुनो, आज दीपावली है, ये पांच दीपक तुम मन्दिर में रख आना।'' पति वरूण मन्दिर गया तो देखा मन्दिर के पास वाली सेविका की कुटिया में अंधेरा है। वरूण मन्दिर के स्थान की अपेक्षा सेविका की कुटिया में वे दीपक रख आया, बूढ़ी सेविका वरूण को आशीष दे रही थी कि ''बेटा, भगवान तुम्हारा भला करें, खुश रहो, तुम्हारे घर में हमेशा उजाला रहे।''

फोटो

परिचित शिवशंकर जी के जवान पुत्र की असामयिक मृत्यु पर संवेदना प्रकट करने अनिल जब उनके घर गया, तो स्तब्ध रह गया कि किसी को समय ही नहीं है, संवेदना प्रकट करने आने वालों से बात करते के लिए। शिवशंकर जी मोबाइल पर फोटो बड़ी करवाकर फ्रेम करवाने के लिए आदेश दे रहे थे। कोई टेंट लगवा रहा था, कोई फूलमाला ला रहा था, पुत्र के लिए दुख तो कहीं था ही नहीं।

रिश्ते

मंजरी उदास थी, ''पापा–मम्मी के जाने के बाद कितने ही रिश्तेदार बदल गए ऐसा क्यों होता है?'' पापा बोले ''मंजरी, ज़िन्दगी के रंगमंच पर जिस पात्र का जितना रोल है, उतना कर जीवन के स्टेज से उतर जाता है, दूसरे पात्र आ जाते हैं, कई नये भैया भाभी तो हमसे जुड़ गए हैं, पुरानी यादें जख़्म ही देती हैं, रिश्तों के परायेपन को भूल कर नए परिचितों के स्नेह का मूल्य पहचानो, यही जीवन है, बेटी।''

लक्ष्मी

नगर सेठ अपनी पुत्रवधू के गर्भ में पल रही कन्या भ्रूण का एबार्शन करवाने के लिए स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ. मालती को मुंहमांगी रकम देने के तैयार थे, पर डॉ. मालती ने स्पष्ट मना कर दिया, ''सर, लक्ष्मी के चंद नोटों के लिए मैं संसार में आने वाली लक्ष्मी की हत्या का पाप नहीं कर सकती, सॉरी सर।'' कुछ दिन पश्चात् डॉ. मालती का स्थानांनतरण गांव के प्राइमरी चिकित्सा केन्द्र में कर दिया गया था।

निरीक्षण

सरकारी स्कूल में उपखंड अधिकारी निरीक्षण करने गए थे, कक्षा 6-7-8के बच्चे गणित के प्रश्न भी हल नहीं कर पा रहे थे। हिन्दी की पुस्तक भी नहीं पढ़ पा रहे थे, अचानक उपखंड अधिकारी ने मैडम अर्चना से पूछा, ''आपके बच्चे भी इसी स्कूल में पढ़ते हैं क्या?'' अर्चना बोली, ''सर, नहीं उन्हें तो मैंने कान्वेन्ट पब्लिक स्कूल में डाला है।'' अधिकारी बोले, ''उन्हें भी इसी स्कूल में ले आइए, स्कूल स्वत: ही सुधर जाएगा।''

बेटी

विक्रम के मित्र कटाक्ष करते रहते थे, ''बेटी के घर रहना पाप है, नरक मिलेगा, अपना मकान बनवाते, बाई रख लेते, पैसे खर्च करते, भाभीजी नहीं है तो क्या, बेटी के घर रहना ठीक नहीं है।'' विक्रम बोला, ''मित्रों, मेरी बेटी को कोई परेशानी नहीं है, तुम्हारे बेटे बहू तो तुम्हें पूछते नहीं, मुझसे ईर्ष्या जलन करने से क्या लाभ? स्वर्ग नरक मुझे नहीं पता, अभी तो मैं बेटी की सेवा से स्वर्ग सा सुख ले ही रहा हूँ।''

दहेज

पवित्रा ने विवाह के उम्मीदवार पंकज से पूछा, ''मैं एम .ए ., बी .एड . हूँ, दो साल में आपको पांच लाख रुपये कमाने का वचन देकर देने की क्षमता रखती हूँ, मेरे मम्मी पापा से आप के मम्मी पापा अभी पांच लाख रुपये लेकर उन पर कर्ज नहीं चढ़ाऐं, तो अच्छा होगा।'' पंकज ने स्पष्ट किया, ''वह मम्मी पापा की इच्छा है, मैं उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए मजबूर हूँ।'' पवित्रा ने स्पष्ट किया, ''मैं तुम्हें अस्वीकार करती हूँ।''

बेस्ट फ्रेंड

मीता रो रही थी, ''दीदी, मेरी बेस्ट फ्रेंड सीमा ने मुझे धोखा दिया।'' दीदी बोली, ''बेस्ट फ्रेंड मम्मी के अलावा और कोई हो ही नहीं सकता और मम्मी कभी धोखा दे ही नहीं सकती, मैंने पहिले भी तुम्हें समझाया था, तुम्हारे दुख में जिसकी आंख में आंसू आते हैं, वही बेस्ट फ्रेंड होता है एवं इस परिभाषा पर मात्र एक मम्मी ही खरी उतरती हैं, मम्मी को बेस्ट फ्रेंड बना लो, कभी धोखा नहीं खाओगी।''

ट्यूशन

अभिभावक मीटिंग में विनय अरूणा ने प्रिंसिपल से अपने पुत्र केशव की पढ़ाई की समस्या का समाधान पूछा, तो प्रिंसिपल सर ने स्पष्ट किया, ''स्कूल में सर, मैडम गृहकार्य की कापी में उसकी कमियां लिखकर भेजते रहे, वे तो आपने पढ़ी नहीं, बस ट्यूशन लगा दी, बच्चे को समय दीजिए, उसकी कॉपी प्रतिदिन चेक किजिए, उसकी बीमारी की दवाई ट्यूशन नहीं हैं, सही दवाई है आप का समय।''

तुलसी

गांव में बूढ़ी मां शहर के ऑफिसर बेटे की बालकनी में तुलसी का गमला तलाश कर रहीं थीं, ताकि तुलसी पर दीपक प्रज्वलित कर परिक्रमा कर तुलसी दल मुंह में डालकर दिनचर्या प्रारम्भ कर सकें, पर निराश ही हुई, पीड़ा पुत्र के समक्ष बतानी ही पड़ी। बेटा संस्कारी था, समझ गया, स्वयं पर शर्म भी आई, चुप रहा एवं चुपचाप कार निकालकर तुलसी का पौधा लेने नर्सरी चल दिया।

खीर

कमला ने पुत्र गोविन्द से कहा, ''बेटा, कल तुम्हारे बाबूजी का श्राद्ध है, घर में तो बहू है नहीं, तुम मंदिर के पंडितजी को कुछ रुपये दे देना, वे खीर बनाकर खा लेंगे।'' गोविन्द मन्दिर के पंडितजी के वैभव कूलर, कार, गले में सोने का हार देखकर मंथन करने लगा एवं सामने वाली दुकान से दूध, चावल, चीनी लेकर मंदिर के बाहर फूल माला बेच रही बूढ़ी माई को दे आया, ''माताजी, इसकी आप खीर बनाकर खा लेना।''

लड्डू

छुट्टी में सब दादा-दादी के गांव गए तो बूढ़ी दादी ने पोते को अपने हाथ से बनाए बेसन के लड्डू खिलाए, तो बच्चे स्वादिष्ट लड्डू खाकर आश्चर्य कर रहे थे, ''दादी इनमें आपने क्या-क्या डाला।'' दादी मुस्कराकर बोली, ''बस चीनी, घी, बेसन।'' बच्चे पापा से बोले, ''पापा, अपने शहर की काजू कतली, बादाम बर्फी में इतना अच्छा स्वाद नहीं है, जितना दादी के इन लड्डूओं में ऐसा क्यों?'' पापा मुस्कराकर बोले, ''इनमें दादी ने अपना प्यार भी डाला है।''

अगरबत्ती

मंदिर के सामने वानी दुकान से अगरबत्ती खरीदते हुए केशव ने कहा, ''भैया, ये एक वर्ष पुरानी सी अगरबत्तियां क्यों रखीं हैं? आजकल तो नई नई ब्रांड की आ रही है, नया सामान क्यों नहीं लाते?'' दुकानदार बोला, ''आप लोग मन्दिर में ये पेकेट चढ़ाते हैं, सुबह पुजारी वापिस हमें बेच जाता है, पुराना स्टाक खत्म हो, तभी तो नया स्टाक हम लाने की सोचें, हमारे लिए तो प्रतिदिन अंडा देने वाली मुर्गी है।''

मंत्र

विशाखा चहक रही थी, ''पापा, मैंने संस्था के समारोह में संस्कृत के मंत्र सुनाए, मुझे यह स्मृति चिन्ह मिला।'' पापा बोले, ''दीदी भी गई थी क्या?'' विशाखा बोली, ''नहीं पापा, उन्हें तो स्कूल का कोर्स पूरा करना था, उन्हें तो हर कक्षा में प्रथम आने का भूत सवार है, उन्हें मंत्र रटने से अधिक आवश्यक लगता है स्कूल का कोर्स।'' पापा बोले, ''तुम भी दीदी की राह पर चलोगी, तो भविष्य सुखद रहेगा, पहले पढ़ाई फिर मंत्र।''

एकादशी

मां की तेरहवीं के हवन में पंडितजी बोले, ''यजमान, पूरे वर्ष एकादशी के व्रत करने होंगे, माताजी को पुण्य लगेगा उनका, बताइए संकल्प करवाऊं, निकालिए 501 रुपये दक्षिणा।'' रोहित बोला, ''पंडितजी, मम्मी जब हास्पिटल में दो महीने रहीं, कई बार मैं घर खाना खाने नहीं आ पाता था, जीतेजी उनकी सेवा के साथ मैं बहुत सारी एकादशी कर ही चुका हूँ, रहने दीजिए अब ये संकल्प।''

मित्र

अस्पताल के एक ही वार्ड में दो युवक भर्ती थे। संजय बोला, ''फेसबुक पर 125 फ्रेंड्स ने मुझे शीघ्र स्वस्थ होने की शुभकामनाएं दी हैं, तुम्हारा स्कोर क्या है, मुझ से ज्यादा है क्या?'' रोशन मुस्कराकर बोला, ''मेरे पास लेपटॉप नहीं है, इन्टरनेट भी नहीं, हाँ, मेरा एक मात्र मित्र भाभी से मेरे लिए भोजन बनवाकर लेकर आएगा एवं बाहर वेटिंग हॉल में पूरी रात दरी पर ही जागता रहेगा।''

प्रकृति

शशांक ने पूछा, ''पापा, यह हिन्दू-मुस्लिम सिख ईसाई धर्मों में इंसानों को क्यों बांटा गया है?'' पापा मुस्कराकर बोले, ''धर्म की दीवारें इंसानों ने स्वयं बनाई हैं, प्रकृति की हवा, पानी, चाँद, सूर्य सभी इंसानों को समान रूप से उपलब्ध हैं, उसी चन्द्रमा को अर्ध्य देकर हिन्दू सुहागिनें करवा चौथ का व्रत खोलती हैं, उसी चाँद को देखकर मौलवी साहब ईद की घोषणा करते हैं, चन्द्रमा एक ही है।''

धर्म

आशीष सर के बेटे का एक्सीडेंट हो गया था, सर टूर पर थे, ऑपरेशन होना था, खून की तुरन्त आवश्यकता थी। सर के पी .ए . ताहिर का खून ही मिल पाया, पर आशीष की पत्नी असमंजस में थी मुसलमान का खून उनके हिन्दू बेटे को कैसे दे सकते हैं, ताहिर बोला, ''मैडम, खून का रंग एक ही है, सर बाहर हैं, भैया का जीवन बचाना है, इस समय अपने अंधविश्वास अपने पास रखिए, हमें अपना काम करने दें।''

लिफाफे

बेटी की शादी के निमंत्रण–पत्र का ड्राफ्ट बन रहा था। संजय बोला, ''लिफाफे गिफ्ट नहीं लेने एवं मात्र आशीर्वाद देने की सूचना निमंत्रण–पत्र में लिख देते हैं, 100–100 रुपये के लिफाफों का हमें क्या करना?'' अंजली फट पड़ी, ''पागल हुए हो, हलवाई टेन्ट डेकोरेशन में इतना खर्च होगा, लिफाफों से कुछ तो सहारा मिलेगा। अपने आदर्श तुम अपने पास ही रखो, जो भी लोग देते हैं, देने दो, हम भी तो देते हैं।''

सदस्य

विवेक विवाह के एक निमंत्रण पत्र को ध्यान से देखकर बोला, ''कहते थे कि आप तो हमारे परिवार के सदस्य जैसे हैं, मेरा नाम तो कार्ड में है ही नहीं, हाँ, उन भाईयों के नाम अवश्य हैं, जिनसे उनकी बोलचाल भी बन्द है।''
पत्नी रेखा बोली, ''तुम बहुत भोले हो, परिचित मात्र परिवार जैसा है, परिवार का मूल सदस्य नहीं हैं, भावनाओं में मत बहो, समाज की यही रीत है, कार्ड में तो परिवार के ही नाम होते हैं।''

मोबाइल

अंजली गर्व से बोली, ''भाई साहब, बी.एड. कॉलेज में सेशनल प्रेक्टीकल हेतु मुझे बुलाया गया था, देखिए प्रिंसिपल ने मुझे नया मोबाइल गिफ्ट में दिया है।''
मयंक बोला, ''अंजली, तुम्हें एक मोबाइल देकर उन्होंने तुम्हें खरीद लिया था, ताकि तुम उनके छात्र-छात्राओं को अच्छे नम्बर दे सको, बेवकूफ बनाया है उन्होंने तुम्हें, यह गिफ्ट नहीं रिश्वत है, अंजली।''

नियम

प्राइवेट स्कूल में नवनियुक्त अध्यापिका निशा ने 3000 रुपये के सेलेरी वाउचर पर हस्ताक्षर किए पर जब उसे मात्र 1500 रुपये मिले, तो उसने इसका कारण प्रधानाध्यापक से पूछा, तो वे मुस्कराकर बोले, ''निशा मैडम, तुम अभी नई आई हो, स्कूल के नियम तुम्हें नहीं पता हैं, तो किसी सीनियर अध्यापिका से पूछ तो, स्कूल के और भी नियम पता चल जाऐंगे।''

दान

गौरव स्टेशनरी की दुकान पर सरकारी स्कूल में बच्चें की सहायता हेतु 500 कॉपी खरीदने गया, तो दुकानदार बोला, ''सर स्कूलों का नया सत्र प्रारम्भ हो गया है, स्टाक कम है, बच्चों की मांग अधिक है पर खैर आप तो ले जाइए, कल तक वापिस हमारे पास आनी ही हैं।'' गौरव बोला, ''वह कैसे?'' उत्तर मिला, ''आपके कापी बांटने के पश्चात् स्कूल के सर वापिस बच्चों से लेकर हमारे पास ही बेचने आते हैं।''

अनुभव

राजदेव ने स्कूल टीचर से पूछा, ''सर, शिक्षा एवं अनुभव में किसका महत्त्व अधिक है?'' टीचर ने उत्तर दिया, ''दोनों का अपना-अपना महत्त्व है, शिक्षित व्यक्ति परिस्थिति के अनुसार स्वयं को बदलने का प्रयास करता है, अनुभवी व्यक्ति अपनी आवश्यकतानुसार परिस्थिति को बदलने की क्षमता रखते हैं, देश समय काल के अनुसार दोनों ही अपने-अपने स्थान पर आवश्यक हैं।''

किताब

स्कूल के वार्षिक उत्सव में मुख्य अतिथि छात्र-छात्राओं को सम्बोधित कर रहे थे, ''ईश्वर ने हमारे जीवन की किताब का पहला पृष्ठ 'जन्म' एवं अंतिम पृष्ठ 'मृत्यु' लिखकर भेजा है, किताब के बीच के पन्ने हमें स्वयं अपने चरित्र, कर्म, व्यवहार, स्वभाव, सेवा, शिक्षा, संस्कार से भरने हैं, तुम्हारे जीवन की किताब इस प्रकार लिखना, कि सबके लिए वह पथ प्रदर्शक हो।''

ऑटोग्राफ

फाइनल ईयर की मेडिकल स्टूडेन्ट ने प्रिंसिपल से ऑटोग्राफ लिखवाया, तो उन्होने लिखा, ''तुम बड़ी डॉक्टर मत बनना, अच्छी डॉक्टर बनना, हर बड़ा इन्सान अच्छा ही हो गारंटी नहीं, पर अच्छा डॉक्टर हमेशा अच्छा ही होता है, सारे टेस्ट, सोनोग्राफी, स्पेशलिस्ट कई बार रोग नहीं पकड़ पाते, एक साधारण डॉक्टर की तीन गोली से मरीज ठीक हो जाता है।''

पुस्तक मित्र

रश्मि ने क्लास टीचर से पूछा, ''मैडम, पुस्तक मित्र कैसे हो सकती है? हम उससे बात तो कर ही नहीं सकते।'' टीचर ने उत्तर दिया, ''रश्मि, एक अच्छी पुस्तक 100 मित्रों के बराबर होती है, पर एक सच्चा मित्र पुस्तकालय के बराबर होता है, गलत मित्रों की संगत में रहने से अच्छा है, एक अच्छी पुस्तक पढ़ना, पर एक बहुत अच्छा मित्र तो ज्ञान का सागर होता है, इसलिए उसे लाइब्रेरी कहा गया हैं।''

इंसान

मंजरी बोली, ''पापा, देखिए कई रिश्तेदार हमें पूछते नहीं हैं, हमारी बुराई करते हैं, हमें उनसे सम्बन्ध क्यों रखना चाहिए?'' पापा बोले, ''मंजरी बेटी, सच्चे रिश्तों की खूबसूरती एक दूसरे की गलतियों को बर्दाश्त करने में है, हम में भी तो बहुत कमियां हैं, क्योंकि बिना कमी का इंसान तलाश करोगी, तो अकेली ही रह जाओगी, रिश्तों को जोड़कर रखना होता है, तोड़ा नहीं जाता।''

गुटखा

दिनेश ने पान वाले से पूछा, ''गुटखा बन्द होने से तुम्हारे व्यापार पर बुरा असर आया होगा, सरकार को प्रतिबंध के लिए कोस रहे होंगे तुम लोग।'' पान वाले ने कहा, ''बाबूजी, हम तो सरकार को धन्यवाद देते हैं, पहिले 5 रुपये के पाउच पर हमें 1 रुपया ही बचता था, अब तो 5 रुपये के पाउच पर हमें 6 रुपये की कमाई हो रही है, खाने वाले अभी भी 5 वाला पाउच 10 में ले रहे हैं।''

कर्म

शालू बोली, ''मम्मी, हमारे स्कूल की प्रिंसिपल प्रतिदिन लेट आती हैं, हम बच्चों को समय से आने का भाषण देती रहती हैं।'' मम्मी बोली, ''शालू अच्छे इंसान, सिर्फ अपने कर्म से पहचाना जाता है, क्योंकि अच्छी बातें तो बुरे लोग भी कर लेते हैं, वे क्या कर रही हैं, इस पर ध्यान मत दो, तुम स्वयं सही राह पर चलती रहना, समय की पाबंदी तो बहुत बड़ा गुण है।''

समझदारी

सुमित्रा बोली, ''मम्मी, देखिए भैया को, कॉलेज जाने लग गए हैं, तो कितनी बड़ी-बड़ी बातें करने लग गए हैं, समझदार हो गए भैया अब तो।'' मम्मी ने उत्तर दिया, ''सुमित्रा, इंसान तब समझदार नहीं होता जब वह बड़ी-बड़ी बातें करने लगे, बल्कि समझदार तब होता है, जब वह छोटी-छोटी बातें समझने लगे, मोहित को समझदार होने में अभी बहुत समय लगेगा, बेटी।''

मन

शिखा बोली, ''मम्मीजी, मैं बी.एड. करना चाहती हूँ, साइंस से ग्रेजुएट हूँ, ट्यूशन करने की आज्ञा इजाजत देंगी, तो मैं आपकी आभारी रहूंगी, मेरे मम्मी पापा ने मुझे इतना पढ़ाया है, कुछ काम तो आए।'' मम्मीजी का स्पष्ट आदेश था, ''हमारे घर की बहू न ट्यूशन करेगी, न नौकरी, चुपचाप घर के अन्दर रहो, हम सब की सेवा करो एवं अपने बच्चे पालो, बस।'' शिखा बुदबुदाई, ''फिर ले आते आठवीं-दसवीं पास मेरा क्या मन नहीं है?''

सम्मान

रक्तदान शिविर के उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि विचार प्रकट कर रहे थे, ''मित्रों, आज हम ऐसे जीवनदाता को सम्मानित करने जा रहे हैं, जिन्होंने अपने जीवन में 60 बार रक्तदान किया है, जीवन दाता दीपकजी ही इस समारोह के मुख्य अतिथि होने के अधिकारी हैं एवं वे ही रक्तदान शिविर का रिबिन काटेंगे, मैं तो मात्र किताबी ज्ञान सुना रहा हूँ, उन्होंने तो स्वयं कर के बतलाया है।''

कलाई

रक्षा बंधन की सुबह हरीश को कोरियर मिला, एक राखी थी, एक भाव भरा पत्र, ''अनजाने भाई, ट्रेन में हमारी परेशानी सुनकर तुमने मेरे पति के अनजाने शहर में होने वाले ऑपरेशन के लिए अपना रक्तदान कार्ड अगले दिन ही स्केन करके ई-मेल से भेज दिया था, आज मेरी कलाई में सुहाग की चूडियां तुम्हारी सहायता के कारण ही हैं, तुम्हारी कलाई के लिए राखी का धागा भेज रही हूँ।''

बहन

अनीता ने पूछा, ''अंकल, आप की कितनी बहनें हैं?'' अंकल बोले, ''कठिन प्रश्न है।'' अनिता ने फिर पूछा, ''क्यों, अंकल?'' समाज में कई बहनों ने मुझे महीनों तक हर शाम भोजन करवाया है, मेरे दुख दर्द सुने हैं, पत्नी की मृत्यु के पश्चात् गमी की पहली राखी पर घर बुलाकर स्नेह का डोरा बांधा है, गांवों में, स्कूलों में जाने पर कई बहनों ने अपने टिफिन से रोटी खिलाई है, सभी बहनें हैं।

गलती

ममता बोली, ''मम्मी, कोशिश करती हूँ, सम्हल कर हर काम करने की फिर भी गलतियां हो जाती हैं, कुछ उपाय?'' मम्मी बोली, ''ममता, गलतियां तो हर इंसान से होंगी पर हाँ, जिन्दगी में इतनी गलतियां भी ना करो कि पेंसिल से पहिले रबर घिस जाए और रबर को इतना भी न घिसो कि जिन्दगी का पेज ही फट जाए, हर गलती से सीखों, शिक्षा लो एवं सही राह पर चलो।''

आहुति

पंडितजी बोले, ''यजमान, एक किलो घी लेते आना, यज्ञ में आहुति के लिए।'' अगले दिन वह खाली हाथ गया, तो पंडित ने पूछा, ''आप घी लाए नहीं आहुति कैसे लगेंगी?'' वह बोला, ''महाराज् एक किलो घी की अपेक्षा मैं 10 किलो दूध खरीदकर गांव के 40 गरीब बच्चों में बांट आया, उन भीलों के बच्चों ने जीवन में कभी दूध का स्वाद जाना भी नहीं था, मेरी तो 40 आहुतियां लग चुकीं।''

सोना

कमल शान से बोला, ''मेरी बहू पीहर से आधा किलो सोना लेकर आई है, उसके लिए मैंने अलग से बैंक में लॉकर खुलवाया है, तुम्हारी बहू के बदन पर मैंने एक भी गहना नहीं देखा, क्या उसके पीहर वाले बहुत गरीब हैं?'' शशिकांत बोला, ''मेरी बहू के पास चित्रकला की प्रतिभा है, 10 प्रदर्शनी लग चुकी है, पी.एच.डी. है, जिला कलक्टर से जिले की सर्वश्रेष्ठ चित्रकार का सम्मान कर चुकी है।''

दूध

मेमसाहब बोली, ''भैया, हर सोमवार को दूध बहुत पतला आता है।'' ग्वाला बोला, ''बहनजी, गायें-भैसें तो सोमवार को भी उतना ही दूध देती हैं, सोमवार को शिव मन्दिर के बाहर दूध शिवजी को स्नान कराने के लिए मुंहमांगे पैसों पर बेचना होता है, वे महिलाएं तो कोई शिकायत नहीं करती, अब क्या करूं, बेटी शादी लायक हो रही है, कुछ तो ऊपर की कमाई मैं भी कर लूं, बहनजी।''

प्रमोशन

दिनेश बोला, ''सर, मुझे इस साल भी प्रमोशन नहीं मिला?'' सर बोले, ''बेटी की शादी में तुम आए तक नहीं, गिफ्ट भी नहीं भेजा, तुम्हें तो अपने मित्र महोदय की पुत्री की शादी में जाकर पुण्य कमाना था, कमा कर आ गए पुण्य, भगवान तुम्हें फल दे देगा, अब मेरे पास प्रमोशन के लिए रोने क्यों आए हो? जाओ, मेरा समय खराब मत करो, अपने मित्रों-रिश्तों की सेवा करते रहो, बस।''

शादी

सर बोले, ''मैंने पी.ए. के माध्यम से बेटी की शादी का कार्ड भेजा था, तुम आए नहीं।'' गिरधर बोला, ''सर, मेरे घर तो विभाग का हेल्पर कार्ड देने आया था, मैं उस समय, गांव के लिए निकल ही रहा था, मां बहुत बीमार थीं, मैंने सोचा, हेल्पर कार्ड देने आया है, तो उसकी बेटी की शादी होगी, इसलिए मैंने तो शगुन हेल्पर को ही उसी समय उसकी बेटी को देने के लिए दे दिया था।''

फीस

देवेन्द्र के मित्र रजत ने बधाई दी, ''बधाई, तुम्हारी बेटी की आई .आई .टी . की प्रवेश परीक्षा में सफलता की।'' देवेन्द्र आश्चर्य चकित था, ''उसने तो फीस किताबों के लिए पैसे देने को मना कर दिया था, फिर?'' घर आकर बेटी से पूछा, तो बोली, ''सॉरी, पापा आपने तो मना कर दिया था, पर मेरी इच्छा थी मैंने एक कम्प्यूटर ट्रेनिंग स्कूल में ट्रेनिंग देकर उस कमाई से फीस भी भर दी थी एवं तैयारी भी कर ली थी।''

कागज

श्रद्धा को पिछले वर्ष की कॉपियों से खाली पृष्ठ अलग करते देख पापा बोले, ''नीता, श्रद्धा, तुम दोनों यह क्या प्रोग्राम कर रही हो?'' उत्तर नीता ने दिया, ''पापा, हम दोनों बहनों का यह अभियान पर्यावरण की रक्षा, पेड़ों को बचाने, कागज बचाने का है, इन खाली पन्नों से हम अगले वर्ष के लिए गणित के अतिरिक्त प्रश्न घर में हल करने के लिए रफ कॉपी बना लेंगी, आपको रफ वर्क के लिए रजिस्टर नहीं लाने होंगे।''

पुल

अभिभावक, शिक्षक मीटिंग में कई अभिभावकों ने प्राचार्या मैडम से प्रार्थना की, ''मैडम, स्कूल की कई शिक्षिकाएं छात्राओं पर ध्यान नहीं देती, प्रताड़ित करती हैं, लड़कियां आपके पास आने से भी डरती हैं, आपने अपने कार्यालय के दरवाजे बन्द कर रखे हैं, दीवारें खड़ी कर रखी हैं, चारों ओर इसलिए स्कूल में क्या हो रहा है, आप को पता नहीं चल पाता, दीवारें नहीं, पुल बनाइए, संवाद बनाए रखिए, मैडम।''

कविता

नीहारिका बहुत प्रसन्न थी, ''पापा, मुझे आज कविता पाठ में प्रथम पुरस्कार मिला, वाह क्या लिखते हैं आप, आप की डायरी में से कविता लिखकर मैंने स्कूल में सुनाई, तो सब खुश हो गए।'' पापा धीरे से बोले, ''नीहारिका, मार्गदर्शन ले लेती, लेकिन स्वयं लिखकर स्वरचित कविता में सांत्वना पुरस्कार भी मिलता या मात्र भाग लेने का भी अवसर मिलता, तो बेटी मुझे अधिक खुशी होती।''

गुल्लक

बूढ़ी मां बेटे से फरियाद कर रही थी, ''बेटा, समय हो तो मेरी आंखों का ऑपरेशन करवा दे, बहुत कम दिखाई देता है।'' बेटा भड़क गया, ''आपको पता नहीं कि हमें अगले महीने जाना है, ससुराल में मेरे साले की शादी है, अभी खर्चा कहां से आएगा? नन्ही पोती अनन्या ध्यान से सुन रही थी, अपनी गुल्लक लाकर दादी से बोली, ''लो दादी, मेरी गुल्लक पापा को दे दो, तुम्हारे ऑपरेशन के लिए।''

तर्पण

पंडितजी ने स्पष्ट कर दिया, ''तुम बेटी हो, बेटी के हाथ का श्राद्ध पिंडदान, तर्पण कुछ भी मृतक को नहीं लगेगा, तुम्हारे रिश्ते के किसी भाई को बुलाओ।'' मंजूषा बोली, ''पर पंडितजी क्यों? रिश्तों के भाईयों ने मेरे या पापा के लिए किया ही क्या है, जो वे पापा के तेरहवीं के हवन करवायेंगे, फिर दाह-संस्कार के समय तो मैंने अग्नि दी थी, तो चिता तो जल ही गई थी ना।''

सूचना

सूचना के अधिकार के अंतर्गत विक्रम ने अपनी गोपनीय रिपोर्ट पूरी देख ली थी। विक्रम के एक भूतपूर्व उच्च अधिकारी, जो अब सेवानिवृत्त थे, से उसके पारिवारिक घनिष्ठ सम्बन्ध थे, परन्तु गोपनीय रिपोर्ट में सामान्य ग्रेडिंग पढ़ने के पश्चात् विक्रम ने उन अधिकारी से सम्बन्ध घनिष्ठता से औपचारिकता में बदल लिए थे, अधिकारी सादगीपूर्ण सरल व्यक्ति थे, विक्रम बदलना पहचान नहीं रहे थे।

प्रॉपर्टी

ललित शान से कह रहा था, ''शहर में दो फ्लेट हैं, गांव में भी पूर्वजों का मकान है, खेत हैं, जमीन है, रिटायरमेन्ट पर ग्रेचुएटी फंड के एक करोड़ रुपये तो मिल ही जायेंगे, बेटा विदेश में इंजीनियर है, बुढ़ापें में शहर में शान से रहेंगे हम पति पत्नी, पर हाँ, तुम्हें तो बेटी का ही सहारा है, भाभीजी तो हैं नहीं अब।'' प्रतीक धीरे से बोला, ''मेरी इकलौती संतान बेटी ही मेरी एकमात्र प्रॉपर्टी है, मैं संतुष्ट हूँ।''

समय

कविता बोली, ''भाभी, तुम दिन भर हम सब की सेवा करती रहती हो, फिर एम .ए . करने के लिए समय कैसे निकाल लेती हो, मुझे तो कोई जिम्मेदारी नहीं होते हुए भी समय नहीं मिल पाता।'' भाभी मुस्कराकर बोली, ''ननद रानी, जब आप सब सुबह सोते रहते हो, सुबह 5 बजे उठकर 2 घंटे पढ़ लेती हूँ, दिन में भी अपने कमरे में टी .वी . देखने की अपेक्षा एक घंटा पढ़ लेती हूँ, मन हो तो समय निकल ही जाता है।''

प्रार्थना

मानसी बोली, ''अंकल, दादीजी तो गायत्री मंत्र की पूरी 108बार मंत्र जाप करती हैं, पर आप कहते हैं, स्नान के पश्चात् बस एक बार गायत्री मंत्र प्रार्थना में बोल लो, क्या गायत्री माता मेरी एक बार की प्रार्थना नहीं सुनेंगी, दादी की सुनेंगी।'' अंकल ने कहा, ''मानसी, तुम्हें स्कूल जाना होता है, ट्यूशन होमवर्क भी इसलिए तुम्हारे लिए मन से की गई एक बार प्रार्थना ही पर्याप्त है, मां तो भाव श्रद्धा से प्रसन्न होती है।''

यज्ञ

प्रिया ने रेलवे स्टेशन के बुक स्टाल के दुकानदार से पूछा, ''अंकल, मेरी नानी ने मुझे सौ रुपये दिए हैं, मैं दादी के गांव जा रही हूँ, वहां पर बच्चों को अक्षर ज्ञान करवाना चाहती हूँ, बच्चों को सिखाने के लिए कुछ किताबें इन सौ रुपयों में मुझे दे दीजिए, प्लीज!'' बुक स्टाल वाला एक छोटी सी लड़की की सोच से बहुत प्रभावित हुआ, ''शाबाश बेटी, ये लो 100 रुपये की पुस्तकें तुम्हारी एवं 50 रुपये की मेरी ओर से तुम्हारे ज्ञान यज्ञ में।''

प्रोजेक्ट

विज्ञान प्रदर्शनी में निर्णायक की भूमिका कर रहे जयंत सर ने एक छात्रा से पूछा, ''तुमने सौर ऊर्जा के इस प्रोजेक्ट के लिए किस की सहायता ली, स्पष्ट व सच बतलाना।'' छात्रा बोली, ''जी सर, मम्मी कला से ग्रेजुएट है, पापा को व्यापार से समय ही नहीं है, स्कूल में साइंस टीचर ने स्पष्ट मना कर दिया था, हमारे पड़ोस में एक सेवानिवृत्त वैज्ञानिक बच्चों की नि :स्वार्थ मदद करते हैं, वही हैं मेरे प्रोजेक्ट की प्रेरणा।''

फोटो

बस का एक्सीडेंट हो गया था, घायल कराह रहे थे, गांव वाले घायलों को निकाल रहे थे, संसाधन जितने थे, घायलों को नगर के अस्पताल पहुंचा रहे थे, तभी एक पत्रकार पहुंच गए फोटो खींचने, गांव वाले बोले, ''भैया, अपनी गाड़ी में तीन चार घायलों को नगर अस्पताल पहुंचा दो ना, तुम्हारा भला होगा।'' पत्रकार महोदय भड़क गए, ''मैं ड्यूटी पर हूँ, समाज सेवा के लिए नहीं आया हूँ, अभी मुझे समाचार मेल करना है।''

नि:शुल्क

साधना शिविर नि:शुल्क था, एक साधक नीलेश रजिस्ट्रेशन हेतु गया तो उसके हाथ में 500 रुपये की रसीद दे दी गई, वह बोला, आपने प्रचार पत्र में तो नि:शुल्क की घोषणा की है, रजिस्ट्रेशन करने वाले सज्जन बोले, ''जी, रहना खाना नि:शुल्क ही है, यह तो पांच दिन के शिविर के कोर्स की पुस्तकों का मूल्य है, एक सेट आपको लेना ही होगा, तभी तो आप हमारे गुरूजी से ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे ना।''

सिस्टर

मां अंतिम सांसे गिन रही थी, कोमा में वेंटीलेटर पर आ गई थी, ड्यूटी सिस्टर ने जब उनके पुत्र अरूण को ही एक महीने से निरन्तर अकेले ही हॉस्पिटल में 24 घंटे देखा, तो कारण पूछा, ''हाँ, सिस्टर, भाई बहन तो और भी हैं, पर?'' सिस्टर की आंखें भी भर गई, मां की मृत्यु के पश्चात् जब अरूण ड्यूटी सिस्टर को उनकी सेवा के लिए आभार प्रकट करने गया तो, इस बार सिस्टर एवं अरूण दोनों ही रो रहे थे।

बिस्कुट

तरूण अपने जन्म दिन पर गांव के स्कूल के बच्चों के लिए बिस्कुट के पैकेट लेकर गया तो बच्चे प्रसन्न हो गए, सभी बच्चों ने तरूण के पैर छुए, सुलेखा ने कहा, ''सर, स्कूल परिवार आप का कृतज्ञ है, इन बच्चों ने तो जीवन में शायद पहली बार इतने गुणवत्ता वाले बिस्कुट का स्वाद चखा है। हम हर जन्मदिन पर आपकी प्रतीक्षा करेंगे, जन्मदिन मंगलमय हो, सर।''

पानी

शैलेश के बंगले के सामने वाले गार्डन में तपती लू–गर्मी में दिनभर महिलाऐं काम करती रहती थीं। प्यास लगती तो पानी पीने के लिए शैलेश के यहां आ जाती, शैलेश उन्हें फ्रिज में से निकालकर 4–5 बोतलें दे देता, तृप्त हो जाती। एक बार एक महिला बोली, ''साहब, आप तो देवता हैं, पानी पिलाकर हमें पुण्य कमा रहे हैं, पड़ौस की मेमसाहब तो हमें गार्डन में लगे नल से भी पानी नहीं पीने देती।''

रोशनी

दीपावली से पूर्व हेमन्त ने गांव के सरकारी स्कूल में लाइटिंग फिटिंग करवा दी, गांव के स्कूल में रोशनी हो गई, स्कूल प्रधानाध्यापिका तो भाव विभोर हो गई, भीगी पलकों से धन्यवाद ज्ञापन में बोल भी नहीं पाई, हेमन्त को महसूस हुआ कि घर में हजारों रुपये आतिशबाजी, महंगी मिठाई, सजावट, मेहमानों के लिए महंगे उपहार से कई गुना अधिक सार्थक रही इस बार की दीपावली।

पुस्तकालय

पुस्तकालय अध्यक्ष आश्चर्य चकित था, ''सर . मां की स्मृति में तो लोग मन्दिर में दान पुण्य करते हैं, आप उनकी याद में इतनी सारी पुस्तकें हमारी लाइब्रेरी को दान क्यों कर रहे हैं?'' दीपांशु बोला, ''भाईसाहब, मेरी मां को पुस्तकें पत्रिकाएं पढ़ने का बहुत शौक था, इस पुस्तकों का कई शोधार्थी उपयोग करेंगे, इससे बड़ी सार्थकता क्या होगी? मां की आत्मा को भी शांति मिलेगी।''

ऑपरेशन

रूक्मणी बोली, ''बहू, तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है क्या? दो लड़कियों के बाद ही ऑपरेशन क्यों करवा रही हो, एक लड़का तो हो जाने देती।'' बहू अंकिता बोली, ''मम्मीजी, मेरे लिए तो यही दो बेटियां ही घर का चिराग भी हैं एवं कुलदीपक भी, मैं तो इन्हें भी अच्छी शिक्षा एवं संस्कार दूंगी, आजकल लड़के लड़की में कोई अन्तर नहीं है, भाग्यवानों के यहां पुत्री जन्म लेती है।''

छाया

अधेड़ दम्पत्ति की अनोखी इच्छा पर वृद्धाश्रम संचालक आश्चर्यचकित था, ''आप बुजुर्ग दम्पत्ति को घर ले जाकर उनकी सेवा क्यों करना चाहते हैं?'' स्नेहा बोली, ''अंकल, मेरे सास ससुर की मृत्यु के पश्चात् हम दोनों बहुत अकेलापन महसूस कर रहे हैं। हमें सिर पर छत्रछाया चाहिए, बच्चों को दादा-दादी का प्यार, सहारा एक अंकल आंटी को तो हम देंगे ही हमें उनका आशीर्वाद मिलेगा, इसीलिए हम आए हैं।''

छुट्टी

अंकल ने पूछा, ''प्राची, गर्मी की छुट्टी कैसी रही?'' प्राची बोली, ''अंकल स्कूल ही ठीक था, इतनी थकान तो नहीं होती थी, छुट्टी में तो मम्मी पापा पीछे ही पड़ गए, स्विमिंग, डांस, पेन्टिंग, कम्प्यूटर, समर कोचिंग के क्रेश कोर्स, इतनी सारी चीजें एक साथ कैसे सीखी जा सकती हैं? हम बच्चे हैं मशीन नहीं, आप लोगों की छुट्टी अच्छी होती थीं, गांव जाओ, आम तोड़ो, नदी में नहाओं, मैं तो बोर हो गई।''

चरित्र

संस्कार शाला के प्रधान बोले, ''देखिए, हमारे गुरुजी ने यह चरित्र निर्माण की पुस्तक लिखी है, आप को इसी पुस्तक में से बच्चों को समझाना होगा, अलग से अपना ज्ञान नहीं बखानेंगे।'' प्रशिक्षु जयन्त ने विनम्रता से कहा, ''श्रीमान चरित्र तो हममें ही नहीं है, मात्र भाषण देने से क्या होगा? मैं तो इन बच्चों की आदतें सही कर पाया, सही रास्ते पर जीवन जीने के नियम बतला पाया, यही बहुत होगा।''

विधवा

संजना बोली, ''मम्मीजी, करवा चौथ की पूजा करवाइए ना।'' मम्मीजी बोली, ''बहू में पूजा में कैसे बैठ सकती हूँ, अपशकुन होगा।'' संजना बोली, ''नहीं मम्मीजी, मां मां होती है, न सुहागन, न विधवा, करवा चौथ की पूजा में अखंड सौभाग्य का आशीर्वाद तो मैं आप से ही लूंगी, पुरानी सोच छोड़िए मम्मीजी, जल्दी आइए पूजा में भीगी पलकों से मम्मीजी संजना की पूजा करवा रहीं थीं।''

स्नेह

पांच वर्षीया नन्ही गुड़िया मम्मी से पूछती, ''मम्मी, आशीष अंकल हमेशा मेरे लिए चाकलेट गिफ्ट लेकर आते हैं, मैं उनके लिए क्या कर सकती हूँ?'' मम्मी बोली, ''तुम अभी बहुत छोटी हो, जब बड़ी हो जाए, तब जो मन में हो वह करना।'' आशीष अंकल जब भी घर आते, तो कहती, ''अंकल, यहीं पर खाना खाकर ही जाऐंगे, अंकल को खाना खिलाए बिना मैं जाने ही नहीं दूंगी।'' निर्मल स्नेह से आशीष की पलकें भीग जाती थीं।

राखी

नवम्बर महीने में पाठिका मनीषा दीदी के यहां से जब कैलाश राखी बंधवा कर आया, तो लौटते में दो तीन दिन मनीषा दीदी की मम्मी के यहां भी रुकना था, वे बोली, ''अभी कौन सा राखी का मौसम है?'' कैलाश बोला, ''नानीजी, दीदी की स्नेह ममता प्यार भरी राखी तो मेरे लिए अनमोल आशीर्वाद है।'' जब तक राखी का धागा स्वतः ही नहीं गल गया कई महीनों तक कैलाश की कलाई में वह राखी बंधी रही।

घर

मित्रगण कटाक्ष करते, ''मकान बनवा लेते, इतने पैसे बचाकर क्या करोगे?'' वह बोला, ''ईंट पत्थर का मकान तो क्या, संगमरमर का महल भी बनवा लूं, पर घर तो इन्सानों से होता है, 70 वर्ष की उम्र में अकेले रहना, बाई के हाथ की कच्ची पक्की खाना, क्या सुख मिलेगा, मुझे मकान बनवाने से? बेटी एवं उसका जीवन साथी तन-मन से मेरी सेवा तो कर रहे हैं, मुझे न मकान की आवश्यकता है, न दुकान की।''

बाई

नीलम से सहेली रीता ने पूछा, ''नीलम, तुम्हारे घर में टी.वी. भी नहीं है, न्यूज भी नहीं सुन पाती, समाचार-पत्र भी नहीं लेती, फिर तुम्हारे पास पूरे शहर की अप-टू-डेट ख़बरें कैसे रहती हैं? हमें तो पता ही नहीं चल पाता, इतनी ताजा ख़बरें तुम्हारे पास रहती हैं, क्या राज है तुम्हारे पास हर नवीनतम सूचना का।'' नीलम मुस्कराकर बोली, ''मेरे यहां काम वाली बाई आती है।''

शर्ट

मंजरी मिलाप ने अपने जेब खर्च से पैसे बचाकर पापा को जन्मदिन पर शर्ट भेंट दी, तो पापा की पलकें भीग गई। मासूम बच्चों का प्यार देखकर वे अपनी मित्र मंडली में भी दोनों बच्चों को गुणगान करते नहीं थकते थे, प्रतिदिन उसी शर्ट को पहनते, तीन चार दिन बाद रात को धो लेते, सुबह स्वयं ही प्रेस करके पहन लेते, जब तक कॉलर फट नहीं गया, वही शर्ट पहनते रहे।

विदाई

युवा पुत्र की दुर्घटना की असामयिक मृत्यु के पश्चात् राजकमलजी पुत्रवधू माधुरी के लिए चिन्तित थे, ''बेटी, पूरा जीवन है, हमारे बाद भाई भाभी पूछेंगे नहीं, पीहर वालों पर भी भार क्यों बनों? मैंने निर्णय ले लिया है, मेरा रिसर्च स्कालर शालीन, सरल, सुसंस्कृत है, तुम्हें प्यार से रखेगा, वह तुम्हें अपनाने को तैयार है।'' माधुरी क्या कहती? भीगी पलकों से राजकमलजी ने माधुरी का कन्यादान कर विदाई की।

तिलक

पुरुषोत्तमजी बोले, ''संध्या तो आपकी बेटी समान है, परसों हम लड़के वालों के यहां तिलक का दस्तूर लेकर जा रहे हैं, आप तो परिवार के सदस्य समान हैं, चलना ही है।'' राजकिशोर बोले, ''जी, मुझे गरीबों के यहां जाकर रहने खाने के लिए भार नहीं बनना।'' पुरुषोत्तम बोले, ''पर उनका तो करोड़ों का व्यापार है, गरीब कैसे?'' राज किशोर बोले, ''इतना होते हुए भी तिलक में 11 लाख रुपये नगद मांग रहे हैं, मांगने वाला गरीब ही होता हैं।''

भामाशाह

स्कूल कमेटी में वार्षिक उत्सव में मुख्य अतिथि के चयन पर निर्णय हेतु मंथन चल रहा था, ''स्कूल के भामाशाह दान दाता यशपालजी को बुलाते हैं, स्कूल के बच्चों के प्रति उनका स्नेह भी है।'' कमेटी अध्यक्ष बोले, ''नहीं, यशपालजी तो बेवकूफ हैं, वे तो निःस्वार्थ दान हेतु अगले वर्ष फिर आ जायेंगे, हम तो बिजली घर के प्रबंध निदेशक को बुलायेंगे, सरकारी फंड से कुछ देने की घोषणा तो कर ही जायेंगे।''

जीवन

रेखा नाराज थी, ''पिछले महीने ही तो मम्मीजी को आपने खून दिया था, एक महीने बाद ही झूठ बोलकर आज मेरे लिए फिर एक बोतल खून दे दिया, अपना भी तो ख्याल रखों।'' नीहार बोला, ''मेरा ख्याल रखने के लिए तुम दोनों हो ना, मुझे तो मम्मी का भी जीवन बचाना था, तुम्हारा भी, तुम दोनों स्वस्थ रहो, मां की सेवा करना मेरा कर्त्तव्य है, तुम्हें भी स्वस्थ रखना मेरा प्रेम है।'' रेखा भीगी पलकें पोंछ रही थी।

शोध

श्रीवास्तवजी के मित्र सलाह दे रहे थे, ''शोध रिसर्च पी.एच.डी. से क्या मिलेगा? क्यों पैसा लगा रहे हो बेटी की रिसर्च में? नौकरी करवाते।'' श्रीवास्तवजी बोले, ''बंधु नौकरी तो कभी भी कर लेगी, पी.एच.डी. की डिग्री तो उम्र भर कभी भी सहायक ही होगी, रिसर्च में लगा पैसा खर्च नहीं, निवेश है, पूंजी है, स्थायी सम्पत्ति है, मुझे गर्व है कि मेरी बेटी डॉ. मिली से पहचानी जाएगी।'' पापा को सुनकर डॉ. मिली पलकें पोंछ रही थी।

दिलीप भाटिया

जन्म : 26 दिसम्बर 1947

बचपन में कैलाश, स्कूल कॉलेज में दिलीप भाटिया, 38 वर्ष परमाणु ऊर्जा विभाग की सेवा में भाटिया सर, गत: छ: वर्षों से 500 स्कूलों में वार्तालाप करने वाले बच्चों के लिए दिलीप अंकल।

तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम से केन्द्रीय हिन्दी संस्थान आगरा का आत्माराम पुरस्कार 2004 प्राप्त एवं अन्य 100 सम्मान/पुरस्कार।

58 बार रक्तदान जीवन दान, आय का 2 प्रतिशत निर्धन मेधावी छात्राओं की उच्च शिक्षा हेतु पत्रं पुष्पं सहायता।

पुस्तकें : कड़वे सच (2004), छलकता गिलास (2010), उपकार प्रकाशन आगरा से 2011 में समय, 2012 में जीवन, एवं 2013 में कैरियर (सामान्य ज्ञान दर्पण मासिक पत्रिका के साथ देश के लाखों बच्चों को नि:शुल्क भेंट)

यह पुस्तक : तारीखें घटाकर, शीर्षक जोड़ कर, पात्रों के नाम बदल कर मेरी व्यक्तिगत डायरी को 100 लघुकथाओं में परिवर्त्तित कर आप सभी को भेंट उपहार गिफ्ट

सम्प्रति : प्रबंधन, परमाणु ऊर्जा, शिक्षा, संस्कार पर पढ़ना लिखना बोलना

संपर्क
रावतभाटा-323307 (पत्र कोरियर)
मो. : 09461591498
ईमेल : dileepkailash@gmail.com